③ [ ] + [5] = [5]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 3 के अंक   कुल अंक

Ans-1-(i) महात्मा इव ------------------ पुरस्कृतवान् ।

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक संस्कृत सामान्य के द्वितीय पाठः "महात्मा गाँधी" से लिया गया है। यह संकलित अंश है।

प्रसंग → इस गद्यांश में लेखक ने महात्मा गाँधी के कार्यों और उनकी उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन किया है।

अनुवाद → इस महात्मा ने न केवल भारत को स्वतंत्र किया अपितु भारतीय लोगों (जनता) की आर्थिक और सामाजिक दशा को भी उन्नत करने का प्रयास किया। इन सभी कार्यों में "कस्तूरबा" उनके पीछे छाया की भाँति रही। इन्होंने राजनीति में चरित्र की शुद्धता, सत्य और अहिंसा का समावेश कर नवीन नीति पद्धति पुरस्कृत (आरम्भ) की।

(ii) अथ ------------------ व्यवदयत् ।

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक संस्कृत सामान्य के नवमः पाठ नचिकेतः कथा से लिया गया है। यह संकलित अंश है।

प्रसंग → इस गद्यांश में लेखक ने बताया है कि नचिकेता कैसे ने मृत्युआचार्य के आश्रम जाकर क्या किया।

अर्थ → अब नचिकेता पिता की आज्ञा पाकर घर से निकलकर मृत्युआचार्य के आश्रम की ओर चल दिया और उन्हें बाहर गया हुआ जानकर आश्रम के द्वार पर ही चुपचाप बैठ गया। इस प्रकार उसने वहाँ बैठे हुए तीन रातें व्यतीत कर बिना अन्न जल ग्रहण किए हुए व्यतीत कर

5

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

4 | 5 + 4 = 9

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

दी। जब मृत्युआचार्य घर लौटे तो उनकी पत्नी ने उन्हें सारा वृत्तान्त यथानुसार निवेदन किया।

Ans-2-(i) धनिक: - - - - - - - - - - - - - काश्यपेत्।

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सामान्य संस्कृत के प्रथम पाठ: "नीतिश्लोका:" से लिया गया है। यह संकलित अंश है।

प्रसंग → इस पद्यांश में कवि ने बताया है कि किन पाँचों के, एक स्थान पर न रहने से उस स्थान पर नहीं रहना चाहिए।

अनुवाद → धनवान (धनिक), वेदों का ज्ञाता, राजा, नदी और वैद्य ये पाँच जिस स्थान पर नहीं रहते हैं उस स्थान पर निवास नहीं करना चाहिए।

5

B S E M P

(iii) प्रजानां - - - - - - - - - - - - - जन्महेतव:

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सामान्य संस्कृत के षष्ठ पाठ "रघुवंश परिचय" से अवतरित है। इसके कवि महाकवि कालिदास जी हैं।

प्रसंग → इस पद्यांश में कवि कालिदास ने यह स्पष्ट किया है कि क्यों दिलीप राजा को प्रजा का पिता कहा जाता था।

अनुवाद → माता पिता तो केवल जन्म देते हैं, परन्तु प्रजा की रक्षा करने के कारण, उन्हें शिक्षित बनाने तथा उनका पालन करने के कारण दिलीप राजा प्रजा का पिता कहलाता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

5 | 9 + 12 = 21

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 5 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

Ans-3 →

श्लोक →

(1) अश्वमेध सहस्त्रं सत्यं च तुलया धृतम् ।
अश्वमेध सहस्त्राद्धि सत्यमेवातिरिच्यते ।।1।।

(2) कुलीनैः सह सम्पर्कम्, पण्डितैः सह मित्रताम् ।
ज्ञातिभिश्च समं मेलं, कुर्वाणो न विनश्यति ।।2।।

Ans-4 →

(i) सिपाहियों ने श्याल की प्रतीक्षा राजमहल के मुख्य द्वार पर सावधान की स्थिती में खड़े होकर की।

(iii) विद्वान मनुष्यों की वाणी हाथी के दाँत के समान होती है जो एक बार मुँह से निकलने पर वापस नहीं लौटती।

(iv) उन्नत मेघ (बादल) संसार के लोगों के हृदय के ताप (गर्मी) को दूर करता है।

(v) सज्जन मनुष्य नारियल के समान बाहर से कठोर व कुरूप दिखाई देते हैं किन्तु हृदय में नम्र होते हैं।

(vi) श्री विष्णुशर्मा की पुस्तक का नाम "पञ्चतंत्र" था क्योंकि इस पुस्तक में पाँच तंत्र थे।

Ans-5 →

	शब्द	संधि विच्छेद	संधि का नाम
(i)	किमपि	किम् + अपि	व्यंजन सन्धि
(iii)	षडाननः	षट् + आननः	व्यंजन सन्धि
(iv)	प्रत्येकः	प्रति + एकः	स्वर सन्धि

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

P.T.O.

6 | 21 | + | 8 | = | 29
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

Ans-6 →

	संधि विच्छेद	संधि	संधि का नाम
(i)	छिद् + नः	छिन्नः	व्यंजन सन्धि
(ii)	जगत् + नाथ	जगन्नाथ	व्यंजन सन्धि

(2)

Ans-7 →

	सामासिक पद	विग्रह	समास का नाम
(i)	प्रतिदिनम्	दिनम् दिनम्	अव्ययी भाव समास
(ii)	चतुर्युगम्	चतुर्णां युगानां समाहारः	द्विगु समास
(iv)	अश्वघासः	अश्वाय घासः	तत्पुरुष समास

(3)

BSEMP

Ans-8 →

(i)

दातृ (दाता)			
विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः

(ii)

सरित् (नदी)			
विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु

(3)

(iii)

फल			
विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

पृष्ठ के अंकों का योग

7

29	+	19	=	38
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 7 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

Ans-9 → (i)

	इष (इच्छ) लङ्लकार		
पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	ऐच्छत्	~~ऐच्छताम्~~ ऐच्छताम्	ऐच्छन्

(iii)

	प्रच्छ (लोट्लकार)		
पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	प्रच्छानि	प्रच्छाव	प्रच्छाम

3

(iv)

	वद् विधिलिङ्गलकार		
पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदेत्	वदेताम्	वदेयु:

B
S
E
M
P

Ans-10 →

	शब्द	धातु	लकार
(i)	अभणीत्	स्व	लङ्लकार
(iii)	पठेयु:	पठ्	विधिलिङ्गलकार

2

2

Ans-11 →

	शब्द	धातु	प्रत्यय
(i)	गत:	गम्	क्त:
(ii)	~~ध्वा~~	~~क्त्वा~~	
(iii)	दातुम्	दा	तुमुन्

9

पृष्ठ के अंकों का योग

Ans-12 →

(ii) च → रामः लक्ष्मण: च सीता वनं अगच्छन् ।

(iii) ह्य: → ह्य: रविवासर: आसीत् ।

2

8 | 34 + 12 = 50

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 8 के अंक | कुल अंक

Ans-13 → (i) अशुद्ध - अहं विद्यालयं गच्छति ।
शुद्ध - अहं विद्यालयं गच्छामि ।
(ii) अशुद्ध - बालकाः खादति ।
शुद्ध - बालकाः खादन्ति ।

Ans-14 → (ii) वृक्षात् फलानि पतन्ति ।
(iii) गोपालः निर्धनाय वस्त्रं ददाति ।
(iv) अति सर्वत्र वर्जयेत् ।
(v) सः जलं आनयति ।
(vi) श्री गणेशाय नमः ।

Ans-15 → (i) सदाचारः

(1) सताम् आचारः सदाचारः इति कथ्यते ।
(2) सज्जनाः विद्वांसश्च यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचारः भवति ।
(3) सदाचारेण मनुष्यः धार्मिकः, शिष्टो, विनीतो, बुद्धिमान च भवति ।
(4) सदाचारेण एव संसारे जनाः उन्नतिं कुर्वन्ति ।
(5) देशस्य, समाजस्य, जनस्य अपि उन्नत्यै सदाचारस्य महती आवश्यकता भवति ।
(6) सदाचारिणः जनाः सर्वत्र पूज्यन्ते ।
(7) सदाचारिणः बुद्धिः निर्मला भवति ।
(8) ये सदाचारिणः भवति ते एव सर्वत्र आदरं लभन्ते ।
(9) सदाचारस्य गणना धर्मस्यांगेषु भवति ।
(10) अतः सर्वैः सदाचारस्य पालनीया कर्तव्यम् ।

12

पृष्ठ के अंकों का योग